Volume-7, No. 2 Aug.-2020, pp. Hin.24-28

मीडिया के विविध आयाम से विश्व पटल पर हिंदी का बढ़ता वर्चस्व

डॉ यतींद्र कटारिया विद्यालंकार
(लेखक प्रसिद्ध शैक्षिक, सामाजिक व
पर्यावरण कार्यकर्ता तथा श्रम मंत्रालय भारत
सरकार के हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य हैं)
मौ0 महादेव, मण्डी धनौरा अमरोहा उत्तर–प्रदेश भारत।

लेख सार
आज मीडिया अपने विविध स्वरूप में विश्व भर को प्रभावित कर रहा है तथा सूचना प्रौद्योगिकी के साथ भाषाई और सांस्कृतिक सरकार भी प्रभावित हो रहे हैं मीडिया जगत की माया से आज संपूर्ण ज्ञान विज्ञान हमारी मुट्ठी में निहित है ऐसे में हिंदी भाषा वह साहित्य का भी वैश्वीकरण की दृष्टि से व्यापक प्रभाव बढ़ा है आज हिंदी सूचना प्रौद्योगिकी पर सवार होकर विश्व भर में अपने वर्चस्व का डिंडिम उद्घोष कर रही है। हिंदी मीडिया के दोनों सोपान पर आरूढ़ हो निरंतर गतिमान है। प्रिंट मीडिया में पत्र–पत्रिकाओं की बात की जाए तो उस दृ ष्टिकोण से भी हिंदी का वर्चस्व विश्व भर में बढ़ा है । इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में दुनिया के तमाम बड़े टीवी चौनल्स हिंदी में कार्यक्रमों का प्रसारण कर रहे हैं जो भारत की सीमाओं से बाहर दुनिया के अनेक देशों में देखे जा रहे हैं वर्तमान में विश्व के 150 देशों में हिंदी का अध्ययन अध्यापन का कार्य किया जा रहा है हिंदी चीनी भाषा के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी बोली के रूप में स्थापित हुई है जो दुनिया के 80 करोड़ से ज्यादा लोगों के संपर्क की भाषा के रूप में गतिमान है। हिंदी जनसंचार माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निकली है। 21वीं सदी में विश्व पटल पर हिंदी का भविष्य जितना उज्जवल नजर आता है उतना इससे पहले कभी नहीं था हिंदी की वर्तमान स्थिति में कहीं ना कहीं वैश्वीकरण का योगदान है। मीडिया के विविध आयामों से सुसज्जित विश्व पटल पर हिंदी का बढ़ता वर्चस्व भारतीय गौरव का संवर्धन कर रहा है मीडिया का प्रत्येक क्षेत्र हिंदी से कहीं ना कहीं प्रभावित है, वह दिन दूर नहीं जब हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेगी।

मुख्य शब्द– हिन्दी, मीडिया, हिन्दी का विस्तार।

आज मीडिया अपने विविध स्वरूप में विश्व भर को प्रभावित कर रहा है तथा सूचना प्रौद्योगिकी के साथ भाषाई और सांस्कृतिक सरोकार भी प्रभावित हो रहे हैं मीडिया जगत की माया से आज संपूर्ण ज्ञान विज्ञान हमारी मुट्ठी में निहित है ऐसे में मीडिया के विभिन्न सोपान के सरोकार से हिंदी भाषा व साहित्य का भी वैश्वीकरण की दृष्टि से व्यापक प्रभाव बढ़ा है आज हिंदी सूचना प्रौद्योगिकी पर सवार होकर विश्व भर में अपने वर्चस्व का बिल्डिंग उद्घोष कर रही है हिंदी जनसंचार माध्यमों के सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निकली है इसी के चलते विश्व भर में संपर्क भाषा के रूप में भी हिंदी का वर्चस्व बढ़ा है हिंदी विश्व संपर्क भाषा एवं समृद्ध साहित्य के साथ आर्थिक तंत्र का भी मजबूत आधार स्थापित करते हुए विश्व पटल पर अपनी गरिमा में उपस्थिति का प्रभावी आभास करा रही है।[1]

प्राचीन काल में पशु पक्षी भोज पत्रों शिलालेखों मुनादियों आदेश से यात्रा करते हुए आधुनिक तकनीक के प्रादुर्भाव ने मीडिया माध्यमों में क्रांति का सूत्रपात किया है पहले प्रिंट मीडिया मुद्रित माध्यम और फिर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दृश्य श्रव्य माध्यम ने इस दिशा में नए आयाम स्थापित किए हैं मीडिया के विविध आयामों की परंपरा और वर्तमान तकनीक के परिप्रेक्ष्य में मुख्यतः प्राचीन जनसंचार माध्यम आधुनिक जनसंचार माध्यमों में विभक्त किया जा सकता है प्राचीन जनसंचार माध्यम लोकगीत लोकनाट्य लोक साहित्य रंगोली भोजपत्र शिलालेख सभा संगोष्ठी आदि के स्वरूप में थे जबकि आधुनिक जनसंचार माध्यम मुख्यतः दो आयामों के अंतर्गत दृष्टिगोचर होते हैं प्रथम प्रिंट मीडिया अथवा मुद्रित माध्यम जैसे समाचार पत्र पत्रिकाएं पुस्तकें विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित साहित्य वह इतिहास आदि के ग्रंथ द्वितीय सोपान है इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अर्थात इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत दृश्य एवं श्रव्य दोनों तरह के मीडिया संसाधन आते हैं हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में टीवी व कंप्यूटर आदि इलेक्ट्रॉनिक माध्यम तीव्र गति से विस्तारक का कार्य कर रहे हैं तथा विश्व भर में हिंदी की लोकप्रियता में निरंतर संवर्धन हो रहा है

जबकि श्रव्य दृश्य माध्यम के अंतर्गत दूरदर्शन व अन्य टीवी चैनल इंटरनेट मोबाइल फोन आदि भी हिंदी के वैश्विक विस्तार में योगदान दे रहे हैं मीडिया आज जनसाधारण में अत्यंत लोकप्रिय हो रहा है इसके मूल में भाषा व्यवहार और उसके प्रयोग की भूमिका अत्यंत उल्लेखनीय है विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रचार के फल स्वरुप भाषा को अभिव्यक्ति के सर्वथा नवीनतम क्षेत्रों में उपयोग में लाया गया विज्ञान और तकनीक के व्यापक फैलाव के कारण हिंदी को नवीनतम रूप में डालने की आवश्यकता पड़ी ऐसा नया रूप जो विज्ञान और टेक्नोलॉजी के गुणसूत्रों सिद्धांतों के नवीनतम प्रयोग विधियों तथा भाषिक संरचना को वैज्ञानिक रूप से यथा स्थिति में व्यक्त कर सकें विज्ञान और टेक्नोलॉजी ने एक नई संचार भाषा को जन्म दिया है आज कृत्रिम उपग्रहों और कंप्यूटर के द्वारा समाचार पत्र का मुद्रण और प्रसारण संभव हो गया है यही स्थिति इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की भी है विभिन्न मीडिया माध्यमों के अनुकूल हिंदी का स्वतंत्र स्वरूप उद्घाटित हुआ है मुद्रण माध्यम हो या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम दोनों ही विशिष्ट माध्यम हिंदी के वैश्विक वर्चस्व की स्थापना में मील का पत्थर सिद्ध हो रहे हैं संचार भाषा के रूप में हिंदी निरंतर विकसित हो रही है।[2]

जब हम प्रतिमान अनुरूप हिंदी का परीक्षण करते हैं तो पाते हैं कि वह न्यून अधिक मात्रा में प्रायः सभी निष्कर्षों पर खरी उतरती है आज वह विश्व के सभी महाद्वीपों तथा महत्वपूर्ण राष्ट्रों इनकी संख्या लगभग 150 है मैं किसी न किसी रूप में प्रयुक्त होती है विश्व के विराट फलक पर नवल चित्र के समान हिंदी प्रकट हो रही है आज हिंदी बोलने वालों की संख्या चीन के व चीनी के बाद विश्व की दूसरे बड़ी सबसे बड़ी संख्या है इस बात को सर्वप्रथम 1999 में मशीन ट्रांसलेशन समिट अर्थात यांत्रिक अनुवाद नामक संगोष्ठी में टोक्यो विश्वविद्यालय में पेश किया गया था प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार विश्व भर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी भाषा बोलने वालों का स्थान दूसरा है अंग्रेजी तो तीसरे क्रमांक पर पहुंच गई है जयंती प्रसाद नौटियाल ने भाषा शोध अध्ययन 2005 के हवाले से लिखा है कि यदि विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या एक अरब को पार कर चुकी है निर्विवाद है कि हिंदी बोलने वालों की संख्या के आधार पर विश्व में हिंदी की हैसियत बड़ी है तथा वह विश्व की सबसे बड़ी भाषाओं में एक है।[3]

आज हिंदी मीडिया का दायरा तेजी से बढ़ा है क्योंकि यह प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के क्षेत्र में और फिर फिल्म टेलीविजन कंप्यूटर हो गए मोबाइल वगैरह के रूप में बढ़ता ही जा रहा है इसके साथ ही इसका दूसरा काम भी बड़ा है हिंदी मीडिया का काम जीवन के सभी क्षेत्रों की घटनाओं पर विचारों आलोचनाओं और विश्लेषकों को प्रस्तुत करना होता है हिंदी मीडिया का प्रभाव एवं प्रसार आज विश्व के कोने–कोने तक पहुंचा है जिसका सुखद परिणाम विश्व पटल पर हिंदी के बढ़ते क्षेत्र के रूप में देखा जा सकता है आज भारत विश्व के दस नए उभरते सबसे बड़े बाजारों में एक है।[4] इस लिहाज से दुनिया को हिंदी के महत्व का पता है बाजार ने हिंदी को प्रभावित किया है तो हिंदी ने भी बाजार को प्रभावित किया है मीडिया में हर तरह की सामग्री प्रस्तुति का तयशुदा समय होता है हिंदी साहित्य और हिंदी मीडिया दोनों ने एक दूसरे को प्रभावित किया है और दोनों की भाषा भी परस्पर प्रभावित होती है कहा जा सकता है कि कुल मिलाकर वीडियो में हिंदी भाषा की स्थिति निरंतर प्रवाह मान है।

हिंदी जनसंचार माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निकली है यह सत्य है कि हिंदी में अंग्रेजी के तरह का विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित पुस्तक की है भंडार नहीं है उसमें ज्ञान विज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री की अभी दरकार है लेकिन विगत कुछ वर्षों में इस दिशा में उचित प्रयास हो रहे हैं अभी हाल ही में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी माध्यम में एमबीए का पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया है इसी तरह संडे टाइम्स तथा बिजनेस स्टैंडर्ड जैसे बड़े अखबार अब हिंदी में भी प्रकाशित होकर उसमें निहित संभावनाओं का उद्घोष कर रहे हैं पिछले कई वर्षों से यह भी देखने में आया है कि स्टार न्यूज जैसे चैनल जो अंग्रेजी में आरंभ हुए थे वह विशुद्ध बाजारी अभाव के चलते शांत हो गए हैं साथ ही ईएसपीएन स्टार स्पोर्ट्स जैसे चैनल अब हिंदी में कार्यक्रम देने लगे हैं हिंदी को वैश्विक संदर्भ में देने में विज्ञापन एजेंसियों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है।[5] हिंदी आज जनसंचार माध्यमों की भाषा है आज विश्व में सबसे ज्यादा पढ़े लिखे पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिंदी के ही हैं इसका आशय यह है कि पढ़ा–लिखा वर्ग भी हिंदी की महत्ता को समझ रहा है स्थिति यह है कि आज भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया मॉरीशस चीन जापान कोरिया मध्य एशिया खाड़ी देशों अफ्रीका यूरोप कनाडा तथा अमेरिका तक हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चैनलों के जरिए प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं आज मॉरीशस में सात चैनलों के माध्यम से हिंदी धूम मचाए हुए हैं विगत कुछ वर्षों में एफएम रेडियो के

विकास से हिंदी कार्यक्रमों को नया श्रोता वर्ग प्राप्त हुआ है हिंदी सूचना प्रौद्योगिकी रथ पर अरुण होकर विश्वव्यापी बन रही है उसे ई–कॉमर्स इंटरनेट जगत में भी बड़ी सफलता से पाया जा सकता है इंटरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण हिंदी अखबार एवं पत्रिकाएं दूसरे देशों की विविध साइड पर उपलब्ध हैं माइक्रोसॉफ्ट गूगल आई एम तथा विशिष्ट कंपनियां अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं संक्षेप में स्थापित सत्य है कि अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिंदी बहुत ही तीव्र गति से विश्व के सुख–दुख आशा आकांक्षा की चमक बनने की दिशा में अग्रसर है आज विश्व के दर्जनों देशों में हिंदी की अनेक पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं तथा अमेरिका इंग्लैंड जर्मनी जापान ऑस्ट्रेलिया जैसे विकसित देशों में हिंदी के रचनाकार अपनी सृजनात्मकता के द्वारा उदारता पूर्वक साहित्य का संस्पर्श कर रहे हैं हिंदी के शब्दकोश तथा विश्वकोश निर्मित करने में भी विदेशी विद्वान सहायता कर रहे हैं हाल ही में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा हिंदी के विश्वकोश का विमोचन किया गया जो हिंदी के वैश्विक घोष का परिचायक है।[6]

आकाशवाणी वह विभिन्न रेडियो चैनल ने भी हिंदी को विश्व पटल पर पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है बीबीसी की हिंदी शुरुआत 11 मई 1940 को बीवीसी हिंदुस्तानी के रूप में हुई थी इसी कड़ी में रेडियो चाइना वॉइस ऑफ अमेरिका समेत दुनिया के तमाम देशों में हिंदी रेडियो के द्वारा हिंदी का प्रचार प्रसार गति को प्राप्त कर रहा है।[7]

पिछला एक दशक में हिंदी के तकनीकी के विकास की दिशा में अहम सिद्ध हुआ है दस साल पहले हिंदी में डिजिटल ईटीओ पर काम करने के इच्छुक लोगों को जिस किस्म के उलझन और बेचारगी के अनिवार्य एहसास से गुजरना पड़ता था वैसा अब नहीं रहा यह तरक्की भी नजर आती है कि हर नए कंप्यूटर ऑपरेटिंग सिस्टम विंडोज मैकिनटोश लिरिक्स आदि में यूनिकोड की कृपा से हिंदी देवनागरी पहले से ही विद्यमान है हाथ में रखे जाने वाली अधिकांश हैंडहेल्ड डिवाइसेज टेबलेट स्मार्टफोन आदि में भी हिंदी लिखना नहीं तो कम से कम पढ़ना और हिंदी की वेबसाइटों को देखना बहुत आसान हो गया है गूगल हिंदी इनपुट के रूप में अच्छा आई एम मौजूद है जो रोमन पद्धति से हिंदी में लिखना संभव बनाता है दूसरी तरफ सीडैक ने हिंदी के मानक तरीके से टंकण के लिए ऐप जारी किया है हिंदी समर्थित सर्विसेज ईमेल अनुवाद टेक्स्ट टू स्पीच ई–कॉमर्स वह क्लाउड आधारित सर्विसेज का प्रयोग करना अब बहुत जटिल नहीं रहा अपने आसपास की तकनीकी सेवाओं में भी यदा–कदा हिंदी दिखने लगती है।[8]

मीडिया और तकनीकी विश्व में हिंदी के साथ दिखाई देती है खासतौर से सोशल नेटवर्किंग और ब्लॉगिंग में हिंदी का वर्चस्व उल्लेखनीय है इनमें से पहला माध्यम चढ़ाव पर है दूसरे में ठहराव है जिस अंदाज में हिंदी विश्व में फेसबुक को अपनाया है वह अद्भुत है सोशल नेटवर्क की हिंदी में भी खासी धाक है हिंदी अंग्रेजी देशज तकनीकी चित्रात्मक और अनौपचारिक शब्द वाली शब्दावली से भरी हुई है लेकिन है बहुत दिलचस्प इस हिंदी का चित्रण कर उसकी भाषा की सीमाओं रूढ़ियों और विसंगतियों पर किताब लिखी जा सकती है लेकिन यदि आप हिंदी के प्रसार में दिलचस्पी रखते हैं तो यह तथ्य अधिक महत्वपूर्ण है कि वह है तो हिंदी ही सोशल मीडिया में ब्लॉगिंग की महत्ता निरंतर बढ़ रही है देखते ही देखते ब्लॉगिंग समुदाय की बदौलत हिंदी में भी विविधताओं से भरी सामग्री की धारा बह निकली है जो बहुत सजीव व जीवंत तथा हिंदी की विशुद्ध खुशबू लिए हुए हैं जहां तक बड़े पोर्टलों की बात है वे अब पूरी तरह स्थापित हो चुके हैं और किसी अच्छे बिजनेस मॉडल की तलाश में जुटे हुए हैं ऐसे अधिकांश वेब पोर्टल या तो बहुराष्ट्रीय होटलों से आच्छादित है तथा हिंदी संस्करण के रूप में स्वयं को देख रहे हैं या फिर उन्हें किसी ने किसी समाचार पत्र समूह की ऑनलाइन शाखा के रूप में पेश किया गया है।[9]

इस बीच मीडिया जगत में एंड्रॉयड ऑपरेटिंग सिस्टम काफी लोकप्रिय हो गया है यह गूगल की तरफ से शुरू की गई मुख्य स्रोत परियोजना है जिसमें दुनियाभर के लाखों विकासक हाथ बांटते हैं मीडिया का यह तंत्र भी हिंदी के वैश्विक संवर्धन में अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ है दृश्य श्रव्य मीडिया के क्षेत्र में सिनेमा का भी हिंदी को वैश्विक पटल पर प्रचारित और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है जहां मुंबई आ सिनेमा विश्व भर में हिंदी को पहुंचाने में अहंम भूमिका निभाती है वहीं अब विदेशी फिल्मों में भी हिंदी का प्रयोग हो रहा है हॉलीवुड की फिल्मों में भी हिंदी शब्दों का प्रयोग हो रहा है ऑस्कर से सम्मानित फिल्म अवतार हिंदी का ही शब्द है कुछ वर्ष पहले अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धूम मचाने वाली फिल्म स्लमडॉग मिलेनियम का जय हो गाना इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है मीडिया की खबरों के मुताबिक इस गाने का प्रयोग फिलीपींस स्पेन आदि देशों में जेल कैदियों की दशा सुधारने में भी किया जा रहा है।[10]

अभी हिंदी सारी दुनिया में बड़ी तेजी से फैल रही है पिछड़े और विकासशील देशों में ही नहीं बल्कि विकसित देशों में भी हिंदी भाषा की शिक्षा पुरजोर तरीके से चल रही है बात चाहे कॉल सेंटरों की हो या हिंदी फिल्मों की टीवी सीरियल की हो या मीडिया के नित नए माध्यमों की रेडियो जॉकी की हो या एंकरिंग की मनोरंजन की दुनिया की हो या जनसंपर्क के क्षेत्र की विभिन्न व्यवसाय की बात हो या राजनीति के क्षेत्र के हर दौर में इन सभी क्षेत्रों में हिंदी भाषा की अपरिहार्यता दिनों दिन बढ़ती जा रही है।[11]

मीडिया के मनोरंजन का क्षेत्र हो अथवा ज्ञान का क्षेत्र इनमें भी हिंदी का वर्चस्व तेजी से बढ़ा है अनेक ज्ञानवर्धक चैनल तथा डिस्कवरी चैनल नेशनल ज्योग्राफिक चैनल वह मनोरंजक चैनल जैसे कार्टून नेटवर्क स्टार स्पोर्ट्स आदि भी अपने कार्यक्रम हिंदी में प्रसारित करने लगे हैं ऐसे में हिंदी का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वर्चस्व तेजी से बढ़ा है पहले ही देश में निरंतर उपेक्षा का शिकार और सरकारी सहयोग से वंचित हिंदी भाषा आसमान में मौजूद संभावनाओं एवं समय अनुरूप अपने को विकसित करते रहने की सामर्थ्य के कारण तेजी से आगे बढ़ रही है हिंदी विश्व स्तर पर अपनी नई पहचान बना रही है आज हिंदी की अंतरराष्ट्रीय भूमिका स्वप्न नहीं रह गई है यह नए विश्व और नए कलेवर के साथ एक मांग भी है और आने वाले भविष्य की वास्तविकता है। हिंदी में उपलब्ध तकनीकी ज्ञान हिंदी का कंप्यूटराइज्ड हो जाना और हिंदी क्षेत्र का नए मानकों के साथ विश्व पटल पर उभरने से हिंदी के प्रति सभी का मुंह बढ़ता जा रहा है विश्व की बहुराष्ट्रीय कंपनियां कंपनियों का रुझान अधिक मुनाफा कमाने की वजह से हिंदी की तरफ हो चला है यह स्थिति हिंदी के उज्जवल भविष्य का संकेत है।

हिंदी के वर्तमान स्थिति में कहीं ना कहीं वैश्वीकरण का योगदान है और वैश्वीकरण के रूप में हिंदी के वर्चस्व का मुख्य आधार मीडिया की मजबूत भूमिका रही है हालांकि विश्लेषक वैश्वीकरण को मूल रूप से एक आर्थिक संकल्पना मानते हैं जो भारतीय समाज और संस्कृति अपनी 5000 साल से ज्यादा पुरानी होने पर गर्व करती है उसे वैश्वीकरण ने एक झटके में बदल दिया है इसका असर हिंदी पर भी पड़ा है वैश्वीकरण की मूल संकल्पना व्यापार विदेशी निवेश द्वारा आर्थिक सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था पर अधिग्रहण कर तथा आपसी समन्वय आदान–प्रदान के माध्यम से एक मंच का निर्माण करने की प्रक्रिया के रूप में उभरती है इन सब में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है वैश्वीकरण के बाद हिंदी भी एक नई भूमिका में हमारे सामने आई है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि आज विश्व के प्रत्येक कोने में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ी है इसके अध्ययन अध्यापन की समुचित व्यवस्था तथा प्रचार प्रसार में मीडिया की अहम भूमिका है अतः मीडिया के विभिन्न स्वरूप की गरिमा को आत्मसात करते हुए हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाए जाने के लिए समन्वित प्रयास की आवश्यकता है अब यह बात ही मान्य है कि हिंदी विश्व के सर्वाधिक लोगों के द्वारा जिनकी संख्या 80 करोड़ से भी अधिक है बोलचाल के रूप में प्रयुक्त की जा रही है।[12] ऐसे में वह दिन दूर नहीं जब हिंदी को भी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाया जाए क्योंकि इसके पीछे मात्र विश्व के राजनीतिक कारण ही नहीं अपितु हिंदी का व्यापार संपर्क के रूप में भी मजबूत आधार है।

21वीं सदी में विश्व पटल पर हिंदी का भविष्य जितना उज्जवल नजर आता है इतना इससे पहले कभी नहीं रहा है वर्ष 2014 में सत्ता परिवर्तन से भारत के जनमानस में तथा भारत की संसद में हिंदी का प्रयोग बड़ा है विश्व में भी राष्ट्र का गौरव व हिंदी का मान दिनों दिन बढ़ रहा है हिंदी द्वारा अनेक अनेक प्रकार की सीमाओं के लाने के कारण विदेशी कंपनियों का निवेश बढ़ने के साथ–साथ विज्ञापन वह तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी का प्रभाव निरंतर बड़ा है जिससे भारत को आर्थिक वह सांस्कृतिक लाभ प्राप्त हुआ है। मीडिया के विविध आयामों से सुसज्जित विश्व पटल पर हिंदी का बढ़ता वर्चस्व भारतीय गौरव का संवर्धन कर रहा है।[13] मीडिया का कोई क्षेत्र हिंदी के प्रभाव से अछूता नहीं रहा है हिंदी सूचना प्रौद्योगिकी व्यापार तथा संपर्क भाषा के क्षेत्र में निरंतर गतिमान होते हुए विश्व पटल पर अपना प्रवाह बनाए हुए हैं वह दिन दूर नहीं जब हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगी।

संदर्भ सूची

1. प्रतिभा कोचर, जनसंचार माध्यमों में हिंदी प्रयुक्ति, स्मारिका दशवां विश्व हिंदी सम्मेलन पृष्ठ 155 विदेश मंत्रालय भारत सरकार
2. डॉ प्रभु चौधरी, हिंदी ही है राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी, राजभाषा भारती जनवरी मार्च अंक 2016 इस संख्या 21
3. सुवास कुमार, हिंदी मीडिया की भाषिकी, गवेषणा, जुलाई दिसंबर 2015 केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा पृष्ठ संख्या 67

4. डॉक्टर करुणा शंकर उपाध्याय, हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, सामयिकी, 12 सितंबर 2011
5. डॉ. नीलम शर्मा स्पाइल दर्पण 2015 नॉर्वे
6. जितेंद्र कुमार सिंह, सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का अनुप्रयोग, स्मारिका विश्व हिंदी सम्मेलन 2010 प्रकाशक विदेश मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ संख्या 102
7. बालेंदु दाधीच हिंदी कि विशुद्ध खुशबू तकनीकी दुनिया में गगनांचल, दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन विशेषांक जुलाई अक्टूबर 2015 भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद
8. साकेत सहाय, दैनिक जनसत्ता 2 अप्रैल 2017
9. पवन जैन ज्ञान विज्ञान और रोजगार की भाषा के रूप में हिंदी गगनांचल
10. दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन विशेषांक जुलाई अक्टूबर 2015
11. मंजूषा रानी 21वीं शताब्दी में हिंदी का वैश्विक स्वरूप, जनरल ऑफ एडवांस स्कोलरी रिसर्चर इन एलाइड एजुकेशन, अक्टूबर 2015 पृष्ठ 9
12. डॉ सुमित अग्रवाल हिंदी के उन्नयन तथा विकास में महर्षि दयानंद और आर्य समाज का योगदान पृष्ठ 105 दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद
13. कृष्ण कुमार, 21 वीं सदी में विश्व पटल पर, साहित्य अमृत, सितंबर 2015 पृष्ठ 18
14. डॉ अशोक रूस्तगी, बाजार की मांग और हिंदी समाज विज्ञान शोध पत्रिका मार्च 2013 पृष्ठ 205